B.A I Hons Philosophy

II paper

Ethics – आत्मपूर्णतावाद

नीतिशास्त्र मानव आचरण से सम्बन्धित एक ऐसा आदर्शपरक विज्ञान है जो मानव आचरण के शुभत्व/अशुभत्व प्रश्न की निरंतर व्याख्या करने का प्रयास करता है। नीतिशास्त्र का उद्देश्य है मानव आचरण का वास्तविक आदर्श स्थापित करना। हमारा सम्पूर्ण जीवन उसी ओर लगा रहता है और हम क्रमशः उसे सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

आत्मपूर्णतावाद आत्म-सिद्धि के द्वारा प्राप्त होती है अतः यही नैतिक आदर्श है। आत्म-सिद्धि मनुष्य की हर प्रकृति को तुष्ट करने से ही सम्भव है। आत्मपूर्णतावाद मनुष्य के व्यक्तित्व पर जोर देती है। इसके अनुसार बुद्धि और भावना दोनों ही मनुष्य के आवश्यक अंग हैं इसलिए बिना बुद्धि या बिना भावना के मनुष्य पूर्ण नहीं हो सकता। बुद्धि और भावना में आवश्यक सम्बन्ध है। अतः सम्पूर्ण स्व (Self) का विकास ही शुभ है।

अरस्तू ने कहा है कि मनुष्य एक पशु है, पर विवेकयुक्त। उसका स्वभाव रागात्मक और विवेकयुक्त दोनों है अतः इस मत के अनुसार सम्पूर्ण आत्मा की पूर्णता ही उत्कृष्ट शुभ है।

आत्म-सिद्धि का अर्थ सुख प्राप्त करना या
बुद्धि की तृप्ति ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण व्यक्तित्व
का विकास है आत्मसिद्धि के अनुसार को
आत्मपूर्णता कहा है आत्मपूर्णता को
अनन्त की अवस्था भी कहा जा सकता है।

आत्मपूर्णतावाद, सुखवाद और बुद्धिवाद
का समन्वय करता है आत्मपूर्णतावाद बुद्धिवाद
और सुखवाद के झगड़े को दूर कर देता है
सुखवाद के अनुसार सुख ही जीवन का परम
आदर्श है आत्मपूर्णतावाद के अनुसार कामना
और बुद्धि दोनों ही मानव स्वभाव के आवश्यक
अंग हैं क्योंकि बुद्धि बिना कामना के
खोखली है और कामना बिना बुद्धि के अन्धी
है। एक दूसरे के बिना अपूर्ण है अतः सम्पूर्ण
आत्मसिद्धि ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए

आत्मपूर्णतावाद के अनुसार ~~नैतिक~~
उत. कल्प नैतिक नियमों का निर्माण करता है इसके अनुसार
अतः कल्याण सम्पूर्ण आत्मा का है। प्लेटो, अरस्तू
हीगेल, ग्रीन, ब्रेडले आदि इस मत के प्रवर्तक
हैं। हीगेल की उक्ति है 'जीने के लिए मरो'
बुद्धि के विकास के लिए इन्द्रियों का दमन आवश्यक
नहीं है, उनका नियंत्रण होना चाहिए। दूसरी उक्ति
है - 'व्यक्ति बनो' ब्रेडले ने कहा है 'मेरा
स्थान उससे सम्बन्धित कर्तव्य' उसके
अनुसार हर आदमी का समाज में एक
विशेष स्थान है और उससे सम्बन्धित कर्त-
व्यों में उसका कल्याण और पूर्ण विकास
सम्भव है।